

1 पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियोंके नाम, जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया, और बियुनिया में तितर बितर होकर रहते हैं। 2 और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्का के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिथे चुने गए हैं। तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। 3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह को मरे हुआ में से जी उठने के द्वारा, अपक्की बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिथे नया जन्क दिया। 4 अर्यात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिथे। 5 जो तुम्हारे लिथे स्वर्ग में रखी है, जिन की रझा परमेश्वर की सामर्य से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिथे, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है। 6 और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की पक्कीझाओं के कारण उदास हो। 7 और यह इसलिथे है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। 8 उस से तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। 9 और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्यात् आत्काओं का उद्धार प्राप्त करते हो। 10 इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत दूढ़-ढाढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को या, भविष्यद्वक्ता की यी। 11 उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का

आत्का जो उन में या, और पहिले ही से मसीह के दुखोंकी और उन के बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता या, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता या। **12** उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपक्की नहीं बरन तुम्हारी सेवा के लिथे थे बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्का के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातोंको स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। **13** इस कारण अपक्की अपक्की बुद्धि की कमर बान्धकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है। **14** और आज्ञाकारी बालकोंकी नाई अपक्की अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। **15** पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। **16** क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। **17** और जब कि तुम, हे पिता, कह कर उस से प्रार्थना करते हो, जो बिना पड़पात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। **18** क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादोंसे चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। **19** पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। **20** उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया या, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिथे प्रगट हुआ। **21** जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिस ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, और महिमा दी; कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। **22** सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट

प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपके मनोको पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। **23** क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। **24** क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाई है, और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाई है: घास सूख जाती है, और फूल फड़ जाता है। **25** परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा: और यह ही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।।

## 2

**1** इसलिथे सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करके। **2** नथे जन्में हुए बच्चोंकी नाई निर्मल आत्किक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिथे बढ़ते जाओ। **3** यदि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है। **4** उसके पास आकर, जिसे मनुष्योंने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्यर है। **5** तुम भी आप जीवते पत्यरोंकी नाई आत्किक घर बनते जाते हो, जिस से याजकोंका पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्किक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हो। **6** इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है, कि देखो, मैं सियोन में कोने के सिक्के का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्यर धरता हूं: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा। **7** सो तुम्हारे लिथे जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उन के लिथे जिस पत्यर को राजमिस्रीयोंने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया। **8** और ठेस लगने का पत्यर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है: क्योंकि

वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिथे वे ठहराए भी गए थे।

**9** पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकोंका समाज, और पवित्र लोग, और ( परमेश्वर की ) निज प्रजा हो, इसलिथे कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपक्की अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। **10** तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर ही प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई यी पर अब तुम पर दया हुई है। **11** हे प्रियोंमें तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्का से युद्ध करती हैं, बचे रहो। **12** अन्यजातियोंमें तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिथे कि जिन जिन बातोंमें वे तुम्हें कुकर्मि जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामोंको देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।।

**13** प्रभु के लिथे मनुष्योंके ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में रहो, राजा के इसलिथे कि वह सब पर प्रधान है। **14** और हाकिमोंके, क्योंकि वे कुकिर्मियोंको दण्ड देने और सुकिर्मियोंकी प्रशंसा के लिथे उसके भेजे हुए हैं। **15** क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगोंकी अज्ञानता की बातोंको बन्द कर दो। **16** और अपने आप को स्वतंत्र जानो पर अपक्की इस स्वतंत्रता को बुराई के लिथे आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझकर चलो। **17** सब का आदर करो, भाइयोंसे प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।। **18** हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियोंके आधीन रहो, न केवल भलोंऔर नम्रोंके, पर कुटिलोंके भी। **19** क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है। **20** क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज

धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। **21** और तुम इसी के लिथे बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिथे दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। **22** न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। **23** वह गाली सुनकर गाली नहीं देता या, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता या, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता या। **24** वह आप ही हमारे पापोंको अपने देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापोंके लिथे मर करके धार्मिकता के लिथे जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। **25** क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ोंकी नाईं थे, पर अब अपने प्राणोंके रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो।

### 3

**1** हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। **2** इसलिथे कि यदि इन में से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपने अपने पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं। **3** और तुम्हारा सिंगार, दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूंयने, और सोने के गहने, या भांति भांति के कपके पहिनना। **4** बरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। **5** और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती रीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने अपने पति के आधीन रहती रीं। **6** जैसे सारा इब्राहीम की

आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उस की बेंटियां ठहरोगी।। 7 वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियोंके साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनोंजीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।। 8 निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। 9 बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपक्कीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिथे बुलाए गए हो। 10 क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपक्की जीभ को बुराई से, और अपने होंठोंको छल की बातें करने से रोके रहे। 11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई की करे; वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उस के यत्न में रहे। 12 क्योंकि प्रभु की आंखे धमियोंपर लगी रहती हैं, और उसके कान उस की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालोंके विमुख रहता है।। 13 और यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है 14 और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उन के डराने से मत डरो, और न घबराओ। 15 पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिथे सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ। 16 और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिथे कि जिन बातोंके विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चालचलन का अपमान करते हैं लज्जित हों। 17 क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो, कि तुम भलाई करने के

कारण दुख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुख उठाने से उत्तम है। **18** इसलिथे कि मसीह ने भी, अर्थात् अधमियोंके लिथे धर्मी ने पापोंके कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्का के भाव से जिलाया गया। **19** उसी में उस ने जाकर कैदी आत्काओं को भी प्रचार किया। **20** जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न माना जब परमेश्वर नूह के दिनोंमें धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा या, जिस में बैठकर योड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। **21** और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्का, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; ( उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है )। **22** वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दिहनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिककारनी और सामर्यी उसके आधीन किए गए हैं।।

#### 4

**1** सो जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उस ही मनसा को धारण करके हियार बान्ध लो क्योंकि जिस शरीर में दुख उठाया, वह पाप से छूट गया। **2** ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्योंकी अभिलाषाओं के अनुसार नहीं बरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो। **3** क्योंकि अन्यजातियोंकी इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पिय?इपन, और घृणित मूर्तिपूजा में जहां तक हम ने पहिले से समय गंवाया, वही बहुत हुआ। **4** इस से वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साय नहीं देते, और इसलिथे वे बुरा

भला कहते हैं। 5 पर वे उस को जो जीवतों और मरे हुआ का न्याय करने को तैयार हैं, लेखा देंगे। 6 क्योंकि मरे हुआ को भी सुसमाचार इसी लिथे सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का न्याय हो, पर आत्का में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें। 7 सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिथे संयमी होकर प्रार्थना के लिथे सचेत रहो। 8 और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाप देता है। 9 बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई करो। 10 जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाई एक दूसरे की सेवा में लगाए। 11 यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे; तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो: महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन। 12 हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिथे तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। 13 पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। 14 फिर यदि मसीह के नाम के लिथे तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का आत्का, जो परमेश्वर का आत्का है, तुम पर छाया करता है। 15 तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मि होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। 16 पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिथे परमेश्वर की महिमा करे। 17 क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जब कि न्याय

का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते **18** और यदि धर्मी व्यक्ति ही किठनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना **19** इसलिथे जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।।

## 5

**1** तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखोंका गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। **2** कि परमेश्वर के उस फुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिथे नहीं, पर मन लगा कर। **3** और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिककारने न जताओ, बरन फुंड के लिथे आदर्श बनो। **4** और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरफाने को नहीं। **5** हे नवयुवकों, तुम भी प्राचीनोंके आधीन रहो, बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिथे दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियोंका साम्हना करता है, परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है। **6** इसलिथे परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। **7** और अपक्की सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है। **8** सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। **9** विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका साम्हना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं।

**10** अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपक्की अनन्त महिमा के लिथे बुलाया, तुम्हारे योड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। **11** उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।। **12** मैं ने सिलवानुस के हाथ, जिस में विश्वासयोग्य भाई समझता हूं, संज्ञोप में लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो। **13** जो बाबुल में तुम्हारी नाई चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। **14** प्रेम से चुम्बन ले लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो।। तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।।